आठ मुखी रुद्राक्ष – भगवान गणेश का प्रतीक

ॐ नमः शिवाय

" अष्टवक्त्रो महादेवो गणेशो विघ्ननाशनः।
अष्टमुखं तत्प्रमाणं च अष्टदिक्पालरक्षणम्। "

आठ मुखी रुद्राक्ष क्या है?

आठ मुखी रुद्राक्ष भगवान गणेश के समान विघ्ननाशक है। इसे धारण करने वाले को सभी दिशाओं में सुरक्षा और सफलता प्राप्त होती है। आठ मुखी रुद्राक्ष भगवान गणेश का प्रतीक है। यह रुद्राक्ष आठ मुखों (आठ धारियों) से युक्त होता है, जो इसे विशिष्ट और प्रभावशाली बनाता है। इसे धारण करने वाले को भगवान गणेश का आशीर्वाद मिलता है, जो ज्ञान, समृद्धि, बाधाओं को दूर करने और सफलता प्रदान करने के लिए जाने जाते हैं।

आठ मुखी रुद्राक्ष (8 Mukhi Rudraksha) की सतह पर 8 प्राकृतिक खड़ी रेखाएं होती हैं। यदि रेखाएं एक सीध में होती हैं उन्हें एक असली रुद्राक्ष माना जाता है। इस रुद्राक्ष को प्रथम पूज्य भगवान गणेश का स्वरूप माना जाता है। भगवान गणेश माता पार्वती और भगवान शिव के पुत्र हैं, यह बुद्धि और ज्ञान के प्रतीक हैं। इसे धारण करने से भैरव बाबा की भी कृपा प्राप्त होती है। इस रुद्राक्ष को जीवन में आने वाली परेशानियों को दूर करने और संकट में लोगों की मदद करने के लिए माना जाता है। मान्यता है कि इस रुद्राक्ष को पहनने से गंगा में नहाने जैसा पुण्य मिलता है। 8 मुखी रुद्राक्ष की सत्तारुढ़ ग्रह केतु हैं, इस रुद्राक्ष को पहनने से राहु और शनि दोष के बुरे प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। 8 मुखी रुद्राक्ष मूलाधार चक्र से जुड़ा है, जो एक व्यक्ति की सुरक्षा और अस्तित्व के पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार, ग्रहों की धीमी और तेज गति दोनों ही जीवन को काफी प्रभावित करती है। तेज गति वाले ग्रह जीवन को काफी छोटी अवधि के लिए प्रभावित करते हैं जबकि धीमी गति वाले ग्रहों लोगों के जीवन को लंबी अवधि के लिए प्रभावित करते हैं। इसके कारण प्रत्येक जन्म कुंडली में अच्छे और बुरे दोष होते हैं, जिनमें से एक सबसे आम और नकारात्मक दोष है कालसर्प दोष। यह दोष की अवधि लंबे समय तक रहती है और जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। 8 मुखी रुद्राक्ष पहनने से काल सर्प दोष के प्रभाव को खत्म किया जा सकता है, साथ ही पेरशानियों और बाधाओं को दूर करने में मदद मिल सकती है।

आठ मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति कैसे हुई?

शास्त्रों के अनुसार, रुद्राक्ष का जन्म भगवान शिव के अश्रुओं से हुआ है। जब भगवान शिव ने अपनी आंखें बंद कर ध्यान लगाया, तो उनकी आंखों से आंसू गिरे, और जहां ये आंसू गिरे, वहां रुद्राक्ष के वृक्ष उग आए। आठ मुखी रुद्राक्ष में भगवान गणेश का वास होता है और इसे विशेष रूप से शारीरिक व मानसिक बाधाओं को दूर करने में सक्षम माना जाता है।

भौतिक परिपेक्ष्य में देखा जाये तो रुद्राक्ष एलियोकार्पस गनीट्रस वृक्ष के बीज हैं, जो मुख्य रूप से हिमालय, इंडोनेशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों सहित आध्यात्मिक विरासत वाले क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। संस्कृत में, 'रुद्राक्ष' का अर्थ है 'रुद्र के आँसू' - भगवान शिव का एक नाम। प्राचीन ग्रंथों में इन मोतियों को शक्तिशाली आध्यात्मिक उपकरण के रूप में वर्णित किया गया है जो ध्यान, मानसिक स्पष्टता और कल्याण में सहायता करते हैं। रुद्राक्ष का पेड़ उच्च ऊंचाई वाले, उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाता है। मुख्य रूप से नेपाल, भारत और इंडोनेशिया में पाया जाने वाला यह रुद्राक्ष उच्च आर्द्रता और मध्यम तापमान जैसी विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों की आवश्यकता रखता है। इसके पेड़ पर सफेद फूल खिलते हैं, जो बाद में फलों में बदल जाते हैं। जब फल सूख जाता है, तो बीज, जिसे रुद्राक्ष के रूप में जाना जाता है, प्राप्त होता है।

कौन लोग आठ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं?

आठ मुखी रुद्राक्ष को राहु ग्रह के स्वामित्व वाले लोग धारण कर सकते हैं। यदि किसी की कुंडली में राहु दोष हो या राहु के अशुभ प्रभाव हो, तो इसे धारण करना शुभ होता है।

किस राशि पर आठ मुखी रुद्राक्ष का व्यापक प्रभाव होता है?

- **राशि के अनुसार:** यह सभी राशियों के लिए उपयोगी है, लेकिन कर्क, तुला, मकर और कुंभ राशि के जातकों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। राहु की महादशा या राहु की अंतरदशा में इसे धारण करने से शुभ फल प्राप्त होते हैं।
- **सामान्य रूप से:** छात्र, व्यापारियों, कलाकारों और वे लोग जो बार-बार विफलता का सामना कर रहे हैं, इसे धारण कर सकते हैं। इसे धारण करने से निर्णय क्षमता बढ़ती है और कार्यों में सफलता मिलती है।

आठ मुखी रुद्राक्ष से लाभ

आठ मुखी रुद्राक्ष के धारण से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं:

- **धार्मिक और आध्यात्मिक लाभ:** भगवान गणेश का आशीर्वाद प्राप्त होता है। मानसिक शांति और ध्यान में सहायता करता है।
- **आर्थिक लाभ:** धन और समृद्धि में वृद्धि करता है। व्यापार और नौकरी में सफलता दिलाता है।
- **स्वास्थ्य लाभ:** त्वचा और तंत्रिका संबंधी विकारों में लाभकारी। तनाव और मानसिक अवसाद को दूर करता है।
- **ग्रह दोषों का निवारण:** राहु के अशुभ प्रभावों को कम करता है। कुंडली में राहु की महादशा को संतुलित करता है।
- यह पहनने वाले को व्यवसाय और लॉटरी से संबंधित अवसरों और स्टॉक एक्सचेंज आदि क्षेत्र में मदद करता है।
- यह जीवन में अप्रत्याशित हो रही देरी को दूर करने में मदद करता है
- यह विफलताओं और बाधाओं से निपटने में मदद करता है
- यह मानसिकता को बदलने में मदद करता है और आपको प्रतिकूलताओं से निपटने में सक्रिय बनाता है
- यह मूलाधार चक्र को विनियमित करने का काम करता है
- यह केतु के ग्रह प्रभाव को दूर करने में मदद करता है
- यह काल सर्प दोष के प्रतिकूल प्रभाव को नियंत्रित करता है
- यह फेफड़े, लीवर और पेट संबंधी समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है
- यह पहनने वाले में ज्ञान और जागरूकता बढ़ाता है
- यह रुद्राक्षधारी को मजबूत बनाता है और उसे जीवन में चुनौतियों का सामना करने और उनसे निपटने में सक्षम बनाता है
- यह पहनने वाले के जीवन में सफलता लाने में मदद करता है
- यह पहनने वाले को ऊर्जावान बनाता है और जीवन से नीरसता को दूर करता है
- यह व्यक्ति में सकारात्मकता, संतुष्टि और प्रसन्नता का संचार करता है
- यह पैर या हड्डी से संबंधित समस्याओं का इलाज करने में मदद करता है
- यह पहनने वाले को इच्छा शक्ति और स्थिरता प्रदान करता है तथा मानसिक सुस्ती को दूर करने में मदद करता है
- यह पहनने वाले को किसी भी तरह के नकारात्मक गतिविधि से बचाए रखता है
- यह धारक से वासना और लालच को दूर करता है

किसे धारण नहीं करना चाहिए?

- आठ मुखी रुद्राक्ष को अशुद्ध स्थिति में धारण नहीं करना चाहिए।
- मासिक धर्म के दौरान महिलाएं इसे धारण न करें।
- नशे की आदत वाले या अहंकारी स्वभाव के व्यक्ति को इसे धारण करने से बचना चाहिए।
- इसे गलत उद्देश्यों से धारण करने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने का तरीका

- **समय:** इसे सोमवार या बुधवार के दिन सूर्योदय के समय धारण करना शुभ माना जाता है। शुक्ल पक्ष के दौरान इसे धारण करना सर्वोत्तम है।
- **पूजा:** इसे धारण करने से पहले भगवान शिव और भगवान गणेश की पूजा करें। रुद्राक्ष को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर शुद्ध करें।
- **मंत्र जाप:** धारण करते समय निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें: **"ॐ हं हुं नमः"** गणेश मंत्र: **"ॐ गं गणपतये नमः"**
- **स्थान:** इसे गले में लाल धागे या चांदी की चेन में धारण करें।

विशेष सावधानियां

- इसे धारण करते समय मांसाहार और नशे से बचें।
- इसे नियमित रूप से गंगाजल से शुद्ध करें।
- सोते समय इसे उतार देना उचित है।

क्या यह किसी प्रकार का नुकसान कर सकता है?

आठ मुखी रुद्राक्ष को शुद्धता और सही नियमों के साथ न धारण करने पर यह फलदायक नहीं होता। यदि राहु दोष अत्यधिक प्रबल हो, तो बिना विशेषज्ञ की सलाह के इसे न पहनें। यदि इसे धारण करने के बाद भी शुद्ध आचरण न रखा जाए, तो इसके लाभ उल्टे नुकसान में बदल सकते हैं।

आठ मुखी रुद्राक्ष के गुण और रंग

आठ मुखी रुद्राक्ष में आठ प्राकृतिक धारियां या मुख होते हैं। इसके प्रमुख गुण और रंग निम्नलिखित हैं:

गुण:

- यह भगवान गणेश का प्रतिनिधित्व करता है, जो बाधाओं को दूर करने और शुभ कार्यों में सफलता प्रदान करने के लिए जाने जाते हैं।
- यह रुद्राक्ष न केवल मानसिक स्थिरता और शांति प्रदान करता है, बल्कि भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति में भी सहायक होता है।
- इसके भीतर पाई जाने वाली ऊर्जा धारणकर्ता को स्थिरता, ध्यान और अनुशासन में सहायता करती है।

रंग:

- प्राकृतिक आठ मुखी रुद्राक्ष गहरे भूरे से लेकर हल्के भूरे रंग का होता है।
- कभी-कभी यह हल्के लाल रंग की छाया लिए हुए होता है।

धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व

धार्मिक महत्व:

- यह भगवान गणेश का प्रतीक है, जिन्हें 'विघ्नहर्ता' कहा जाता है।
- इसे धारण करने से व्यक्ति के जीवन की बाधाएं समाप्त होती हैं और शुभता का प्रवाह होता है।
- यह रुद्राक्ष वैदिक अनुष्ठानों, पूजा, और जप में उपयोगी है।

आध्यात्मिक महत्व:

- यह साधना, ध्यान और आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है।
- इसे धारण करने वाले का चित्त शांत होता है और आध्यात्मिक उन्नति होती है।
- इसे धारण करने से व्यक्ति के भीतर सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

ज्योतिषीय लाभ

आठ मुखी रुद्राक्ष का प्रमुख ज्योतिषीय लाभ निम्नलिखित हैं:

ग्रह दोष निवारण:

- यह राहु ग्रह के दुष्प्रभावों को कम करता है।
- राहु की महादशा, अंतरदशा या अशुभ प्रभावों को संतुलित करने में सहायक है।
- यह कुंडली में राहु के दोषों को कम करके सकारात्मक परिणाम देता है।

शुभ प्रभाव:

- निर्णय क्षमता में सुधार करता है।
- उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं और करियर में सफलता दिलाता है।
- यह रुद्राक्ष नकारात्मक ऊर्जा को हटाकर सकारात्मकता को बढ़ावा देता है।

वास्तु शास्त्र में महत्व

वास्तु शास्त्र में आठ मुखी रुद्राक्ष को घर और कार्यस्थल में रखने से सकारात्मक ऊर्जा और शांति आती है। इसके वास्तु लाभ निम्नलिखित हैं:

नकारात्मक ऊर्जा का नाश:

- इसे घर, कार्यालय या व्यापार स्थल पर रखने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है।
- यह सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह सुनिश्चित करता है।

वास्तु दोष निवारण:

- घर में राहु ग्रह के कारण उत्पन्न दोषों को समाप्त करता है।
- इसे पूजा स्थल पर रखने से परिवार में शांति और समृद्धि बनी रहती है।

संरक्षण:

- यह वास्तु दोषों से उत्पन्न बीमारियों और बाधाओं को कम करता है।

स्वास्थ्य और कल्याण लाभ

आठ मुखी रुद्राक्ष के धारण से कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ होते हैं। यह शरीर और मन दोनों के लिए फायदेमंद है।

शारीरिक स्वास्थ्य:

- यह तंत्रिका तंत्र को सुदृढ़ करता है।
- त्वचा और गले से संबंधित समस्याओं में लाभकारी है।
- यह थायरॉइड और हार्मोनल असंतुलन को संतुलित करने में सहायक है।

मानसिक स्वास्थ्य:

- यह तनाव, चिंता और अवसाद को दूर करता है।
- ध्यान और मानसिक स्थिरता को बढ़ावा देता है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य:

- मन को शुद्ध करता है और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाता है।
- यह आत्मविश्वास, धैर्य और संयम को मजबूत करता है।

विशेष सुझाव

- **आठ मुखी रुद्राक्ष को शुद्ध गंगाजल से धोकर और शिवजी का अभिषेक करके धारण करना चाहिए।**
- **इसे गले में पहनने के साथ-साथ ध्यान करते समय हाथ में रखने से भी लाभ होता है।**

आठ मुखी रुद्राक्ष भगवान गणेश के आशीर्वाद को प्राप्त करने और जीवन के हर पहलू में सफलता के लिए अचूक साधन है। इसे विधि-विधान से धारण करने पर यह व्यक्ति के जीवन को शुभता और समृद्धि से भर देता है।

"हम अपने ग्राहकों को शुद्ध और प्रमाणित रुद्राक्ष प्रदान करने के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हैं। हमारे सभी रुद्राक्ष अत्याधुनिक लैब में परीक्षण और प्रमाणन के बाद ही उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे आपको गुणवत्ता और शुद्धता का पूर्ण विश्वास मिल सके।"